अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2016) | दिनांक 22.12.2016

छठा वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

पच्चीस बोल, तत्त्वचर्चा, पच्चीस बोल की चरचा, पच्चीस बोल की चतुर्भंगी – 20

प्र.1 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्दों में लिखें – 5

(क) योग पन्द्रह में बारहवां योग कौनसा है? (ख) श्रोत्रेन्द्रिय का विषय लिखें।

(ग) जीव का नौवां व दसवां भेद कौनसा है? (घ) किस अजीव तत्त्व के चार भेद हैं?

(ङ) परपरिवाद पाप कौनसे नम्बर पर आता है? (च) त्रीन्द्रिय का दण्डक कौनसा?

(छ) अधर्मास्तिकाय का गुण लिखें।

प्र.2 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 5

(क) सामायिक पुण्य या पाप? (ख) आश्रव हेय या उपादेय?

(ग) नौ तत्त्व में चोर कितने? साहूकार कितने? (घ) पंचेन्द्रिय संज्ञी या असंज्ञी?

(ङ) तुम्हारे में जीव का भेद, आत्मा, लेश्या और दण्डक कौनसा?

(च) श्रावक तपस्या का पारणा करे, वह व्रत में या अव्रत में?

(छ) बंध जीव या अजीव? (ज) अजीव छः में कौन? नौ में कौन?

प्र.3 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें। 5

(क) इन्द्रिय किस कर्म का उदय?

(ख) किस भेद के (जीव तत्त्व के) जीव कम, किस भेद के जीव अधिक?

(ग) प्राण किस कर्म का उदय? (घ) किस शरीर के जीव कम, किस शरीर के जीव अधिक?

(ड) ध्यान किस कर्म का उदय? (च) तुम्हारे में मोक्ष तत्त्व के भेद कितने?

(छ) किस मिथ्यात्व के जीव कम, किस मिथ्यात्व के जीव अधिक?

प्र.4 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – किसमें व कौन से? 5

(क) सात कर्म (ख) पांच योग (ग) ग्यारह गुणस्थान (घ) अठारह दण्डक

(ड.) दो द्रव्य (च) तीन ध्यान (छ) सात उपयोग

प्रतिक्रमण, जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड), कर्म प्रकृति – 20

प्र.5 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें – 10

(क) पारिणामिक भाव किसे कहते हैं? जीवाश्रित और अजीवाश्रित पारिणामिक के भेदों के नाम लिखें।

(ख) गोत्र कर्म किसके समान है? उदाहरण द्वारा समझाएं।

(ग) नौ तत्त्व द्वार के आधार पर पुण्य, पाप, आश्रव और संवर की परिभाषा लिखें।

(घ) विस्तार द्वार के आधार पर संवर के भेदों की व्याख्या करें।

(ड.) निर्जरा तत्त्व का दृष्टांत लिखें। (च) रूपी अरूपी द्वार लिखें।

(छ) देवायु बंध के कारण लिखें।

प्र.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें – 4

(क) जीवयोनि 'अथवा' सत्यव्रत के अतिचार लिखें।

(ख) वंदना सूत्र 'खमणिज्जो भे से कायदुथ्कडाए' तक 'अथवा' 'उस्सुत्तो से जं विराहियं' तक लिखें।

प्र.7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 6

(क) दर्शनमोहनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें। 'अथवा' नाम कर्म की मूल 42 प्रकृतियाँ कैसे होती हैं, बताएं?

(ख) आनुपूर्वी नाम कर्म को समझाएं 'अथवा' उदीरणा को समझाएं।

(ग) अंतराय कर्म का लक्षण एवं कार्य लिखें। 'अथवा' चारों कषाय चतुष्क के उदय में आने पर उनके प्रभाव की कालस्थिति लिखें।

बावन बोल, इक्कीस द्वार, जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड) – 20

प्र.8 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 6

(क) बाईस परीषह किस–किस कर्म के उदय से?

(ख) संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ग) जीव पारिणामिक के दस भेद छः द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(घ) चौदह गुणस्थानों में संवर के बोल कितने–कितने पाते हैं?

(ड.) उदय निष्पन्न यावत् पारिणामिक निष्पन्न छः द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

प्र.9 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 6

(क) सूक्ष्म में योग, उपयोग, भाव तथा आत्मा?

(ख) मनुष्य स्त्री में जीव के भेद, योग, उपयोग तथा दण्डक?

(ग) अनीन्द्रिय में योग, भाव, वीर्य, पक्ष?

(घ) औपशमिक सम्यक्त्वी में जीव के भेद, गुणस्थान, उपयोग तथा भाव?

(ड.) अचरम में उपयोग, लेश्या, आत्मा तथा दृष्टि?

प्र.10 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) प्रमाण द्वार के आधार पर नय को समझाएं 'अथवा' उपांग, मूल और छेद के नाम लिखें।

(ख) प्रश्नोत्तर द्वार में से त्रीन्द्रिय का विवरण लिखें 'अथवा' प्रत्यक्ष व परोक्ष ज्ञान की परिभाषा लिखते हुए उसके भेदों के नाम लिखें।

लघु दण्डक व पांच ज्ञान – 20

प्र.11 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 12

(क) नारकी व तिर्यंच की अवगाहना लिखें। (ख) ज्ञान द्वार (ग) प्राण द्वार

(घ) समुद्घात द्वार लिखें।

(ड.) लेश्या की परिभाषा लिखते हुए देवता, मनुष्य और तिर्यंच में कौनसी लेश्या पाती है, लिखें।

प्र.12 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) अवग्रह आदि का दो दृष्टांतों से निरूपण करें 'अथवा' अनन्तर सिद्ध के प्रकारों को समझाएँ।

(ख) मनःपर्यवज्ञान के विषय को द्रव्यतः एवं क्षेत्रतः समझाएँ 'अथवा' अन्तगत अनानुगमिक अवधिज्ञान को समझाएँ।

संजया–नियंठा – 20

प्र.13 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 12

(क) परिहार विशुद्धि चारित्र तप की विधि को 'संजया' के आधार पर व्याख्यायित करें।

(ख) ज्ञान द्वार लिखें। (ग) पल्योपम तथा सागरोपम से आप क्या समझते हैं?

(घ) आकर्ष द्वार लिखें। (ड) प्रज्ञापना द्वार लिखें।

प्र.14 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) कषाय कुशील तथा पुलाक का क्षेत्र, गति–पदवी–स्थिति, परिणाम व स्थिति द्वार लिखें।

(ख) भगवती की जोड़ में अप्रतिसेवी पाठ के संबंध में श्रीमद्जयाचार्य का क्या अभिप्राय है?

(ग) कषाय कुशील का प्रव्रज्या द्वार लिखते हुए बताएँ कि पुलाक बकुश आदि की संख्या कषाय कुशील से अधिक क्यों नहीं होती?

(घ) पुलाक तथा बकुश का काल द्वार एवं ज्ञान तथा अध्ययन लिखें।